



Priyangi jha

05 Nov 2024

11:29 AM

Ranchi

Model: All-Dosha-Report

Order No: 121846101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 05/11/2024
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 11:29:00 घंटे
इष्ट _____: 13:48:20 घटी
स्थान _____: Ranchi
राज्य _____: Jharkhand
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:00:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:00:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:10:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 11:39:00 घंटे
वेलान्तर _____: 00:16:27 घंटे
साम्पातिक काल _____: 14:38:51 घंटे
सूर्योदय _____: 05:57:40 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:09:31 घंटे
दिनमान _____: 11:11:51 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 19:06:36 तुला
लग्न के अंश _____: 04:16:46 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मकर - शनि
राशि-स्वामी _____: धनु - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: मूल - 1
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: सुकर्मा
करण _____: वणिज
गण _____: राक्षस
योनि _____: श्वान
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: ये-येनी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1946	कार्तिक	14
पंजाबी	संवत : 2081	कार्तिक	20
बंगाली	सन् : 1431	कार्तिक	19
तमिल	संवत : 2081	आइपसी	20
केरल	कोल्लम : 1200	तुलम	20
नेपाली	संवत : 2081	कार्तिक	20
चैत्रादि	संवत : 2081	कार्तिक	शुक्ल 4
कार्तिकादि	संवत : 2081	कार्तिक	शुक्ल 4

पंचांग

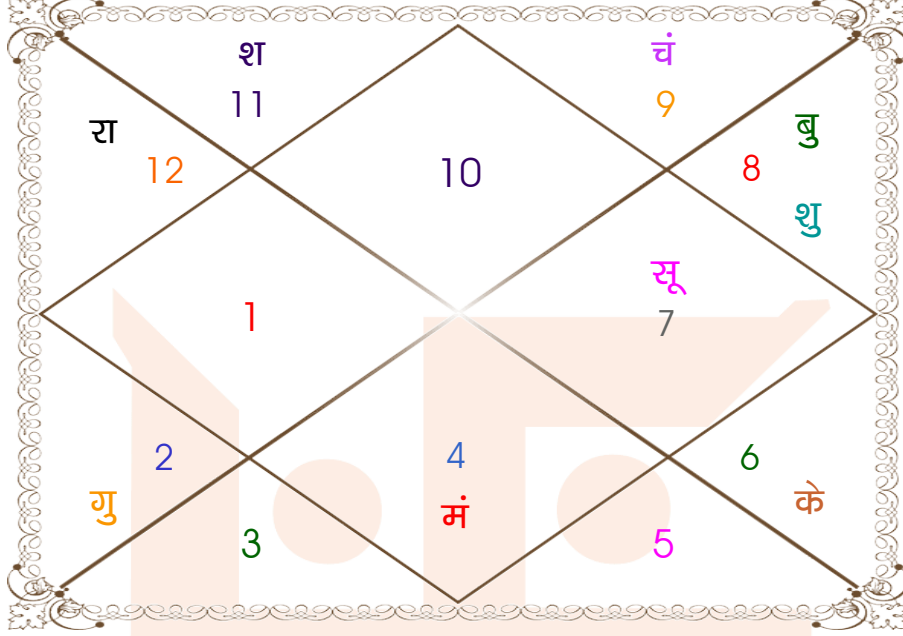
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 4
तिथि समाप्ति काल _____ : 24:17:05
जन्म तिथि _____ : 4
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : ज्येष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 09:45:02 घंटे
जन्म योग _____ : मूल
सूर्योदय कालीन योग _____ : अतिगण्ड
योग समाप्ति काल _____ : 11:27:09 घंटे
जन्म योग _____ : सुकर्मा
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 11:54:13 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 04:19:55
भभोग _____ : 63:07:40
भोग्य दशा काल _____ : केतु 6 वर्ष 6 मा 8 दि

घात चक्र

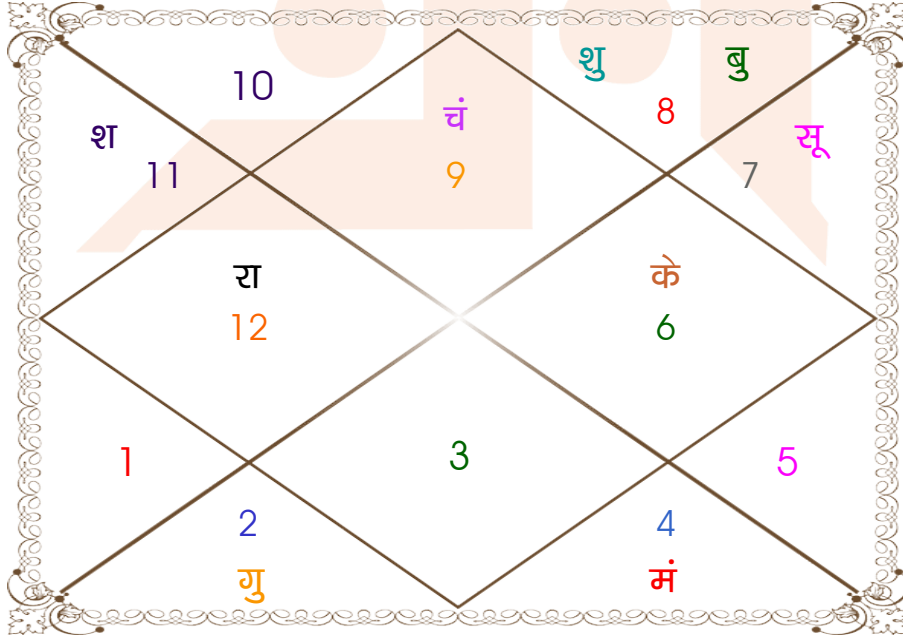
मास _____ : श्रावण
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : भरणी
योग _____ : वज्र
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : धनु
सूर्य _____ : तुला
चन्द्र _____ : कन्या
मंगल _____ : वृश्चिक
बुध _____ : सिंह
गुरु _____ : धनु
शुक्र _____ : कुम्भ
शनि _____ : कन्या
राहु _____ : कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

रा	गु		
श			मं
ल			
चं	शु बु	सू	के

लग्न कुण्डली

गु		रा	
		श	
मं		ल	
के	सू	बु शु	चं

विंशोत्तरी
केतु 6वर्ष 6मा 8दि
केतु

05/11/2024

16/05/2144

केतु	16/05/2031
शुक्र	16/05/2051
सूर्य	15/05/2057
चन्द्र	16/05/2067
मंगल	15/05/2074
राहु	15/05/2092
गुरु	16/05/2108
शनि	17/05/2127
बुध	16/05/2144

योगिनी

उल्का 5वर्ष 7मा 3दि

उल्का

05/11/2024

09/06/2030

उल्का	09/06/2025
सिद्धा	09/08/2026
संकटा	09/12/2027
मंगला	08/02/2028
पिंगला	09/06/2028
धान्या	08/12/2028
भ्रामरी	09/08/2029
भद्रिका	09/06/2030

JYOTISACHARYA IIMT university meerut

PT.BIRENDRA DUBEY(GOLD medalist)sampark daltonganj & Ranchi

9973491191

dubyebirendra@gmail.com

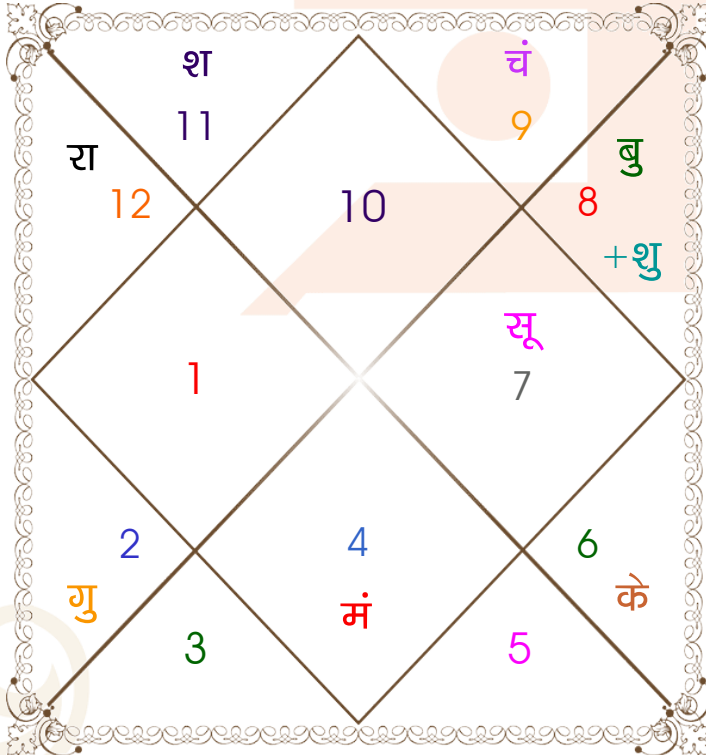
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	04:16:46	381:58:54	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	---
सूर्य			तुला	19:06:36	01:00:10	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	नीच राशि
चंद्र			धनु	00:54:26	12:34:33	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	सम राशि
मंगल			कर्क	06:09:35	00:20:00	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	बुध	नीच राशि
बुध			वृश्चि	09:09:27	01:21:19	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	सम राशि
गुरु	व		वृष	25:56:20	00:05:11	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	राहु	शत्रु राशि
शुक्र			वृश्चि	28:00:05	01:11:55	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	सम राशि
शनि	व		कुंभ	18:34:59	00:01:05	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	मूलत्रिकोण
राहु	व		मीन	11:48:26	00:06:27	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	चंद्र	सम राशि
केतु	व		कन्या	11:48:26	00:06:27	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	मंगल	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	01:31:40	00:02:26	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	गुरु	---
नेप	व		मीन	03:13:16	00:01:02	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	---
प्लूटो			मक	05:34:45	00:00:42	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	---
दशम भाव			तुला	17:57:03	--	स्वाति	--	15	शुक्र	राहु	सूर्य	--

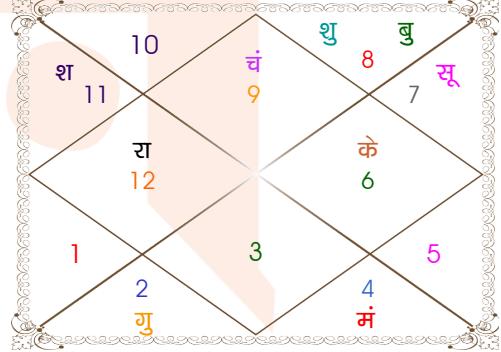
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:12:12

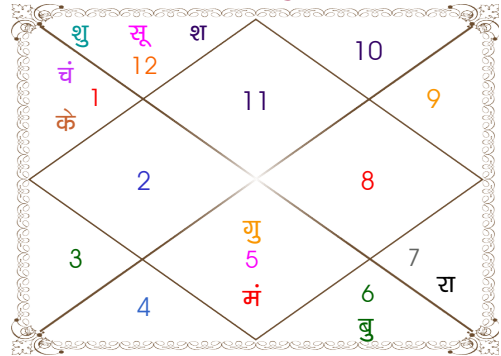
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 21:33:29	मकर 04:16:46
2	मकर 21:33:29	कुम्भ 08:50:12
3	कुम्भ 26:06:55	मीन 13:23:38
4	मेष 00:40:20	मेष 17:57:03
5	वृष 00:40:20	वृष 13:23:38
6	वृष 26:06:55	मिथुन 08:50:12
7	मिथुन 21:33:29	कर्क 04:16:46
8	कर्क 21:33:29	सिंह 08:50:12
9	सिंह 26:06:55	कन्या 13:23:38
10	तुला 00:40:20	तुला 17:57:03
11	वृश्चिक 00:40:20	वृश्चिक 13:23:38
12	वृश्चिक 26:06:55	धनु 08:50:12

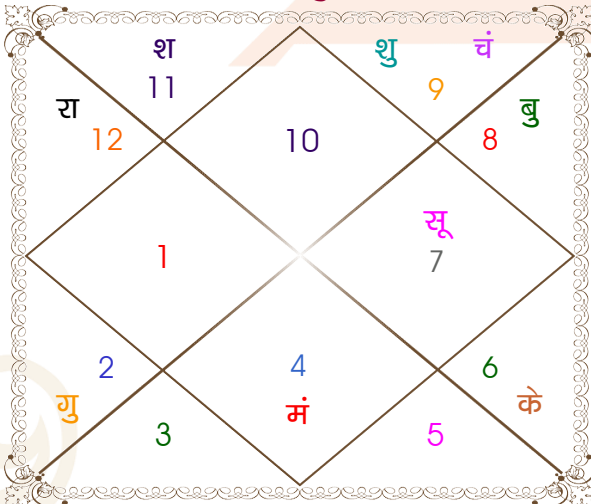
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	04:16:46
2	कुम्भ	10:55:33
3	मीन	17:02:54
4	मेष	17:57:03
5	वृष	14:01:24
6	मिथुन	08:13:43
7	कर्क	04:16:46
8	सिंह	10:55:33
9	कन्या	17:02:54
10	तुला	17:57:03
11	वृश्चिक	14:01:24
12	धनु	08:13:43

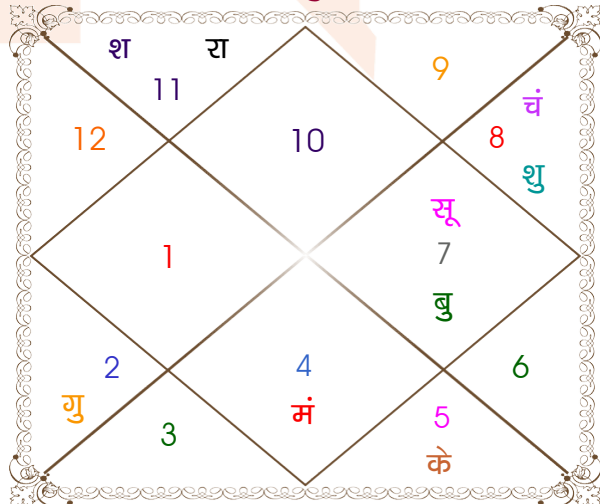
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



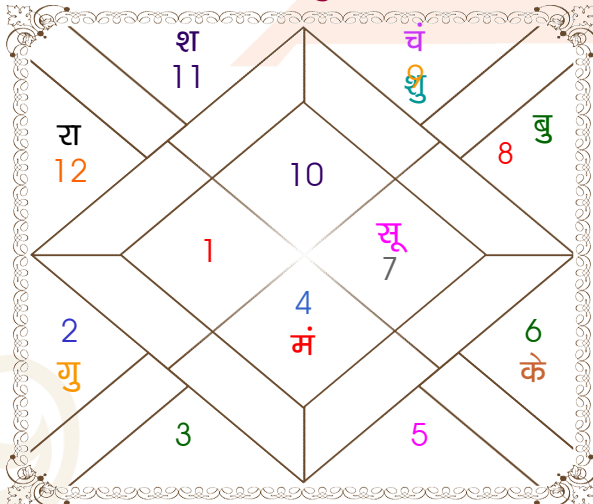
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----		----- अवस्था -----				ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	भातृ	पितृ	वृद्ध	भीत	निद्रा	0.51	71 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	बाल	शान्त	आगम	0.70	39 %
मंगल	ज्ञाति	भातृ	वृद्ध	भीत	आगमन	0.61	68 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	वृद्ध	निपीदित	आगमन	1.75	37 %
गुरु	अमात्य	धन	बाल	खल	उपवेशन	2.19	31 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	बाल	निपीदित	आगमन	1.36	52 %
शनि	मातृ	आयु	वृद्ध	स्वस्थ	आगमन	3.41	50 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	शक्त	नृत्यलिप्सा	0.00	9 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	खल	आगमन	0.00	9 %
कुल						10.52	

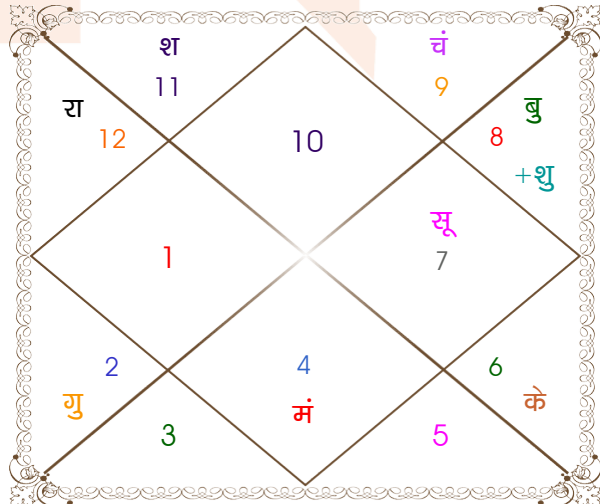
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली



लग्न-चलित



JYOTISACHARYA IIMT university meerut

PT.BIRENDRA DUBEY(GOLD medalist)sampark daltonganj & Ranchi

9973491191

dubyebirendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 6 वर्ष 6 मास 8 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
05/11/2024	16/05/2031	16/05/2051	15/05/2057	16/05/2067
16/05/2031	16/05/2051	15/05/2057	16/05/2067	15/05/2074
05/11/2024	शुक्र 14/09/2034	सूर्य 02/09/2051	चंद्र 16/03/2058	मंगल 12/10/2067
शुक्र 11/12/2025	सूर्य 14/09/2035	चंद्र 03/03/2052	मंगल 15/10/2058	राहु 29/10/2068
सूर्य 18/04/2026	चंद्र 15/05/2037	मंगल 09/07/2052	राहु 15/04/2060	गुरु 05/10/2069
चंद्र 17/11/2026	मंगल 15/07/2038	राहु 03/06/2053	गुरु 15/08/2061	शनि 14/11/2070
मंगल 15/04/2027	राहु 15/07/2041	गुरु 22/03/2054	शनि 16/03/2063	बुध 11/11/2071
राहु 03/05/2028	गुरु 15/03/2044	शनि 04/03/2055	बुध 14/08/2064	केतु 08/04/2072
गुरु 09/04/2029	शनि 16/05/2047	बुध 08/01/2056	केतु 15/03/2065	शुक्र 09/06/2073
शनि 19/05/2030	बुध 16/03/2050	केतु 15/05/2056	शुक्र 14/11/2066	सूर्य 14/10/2073
बुध 16/05/2031	केतु 16/05/2051	शुक्र 15/05/2057	सूर्य 16/05/2067	चंद्र 15/05/2074

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
15/05/2074	15/05/2092	16/05/2108	17/05/2127	16/05/2144
15/05/2092	16/05/2108	17/05/2127	16/05/2144	00/00/0000
राहु 26/01/2077	गुरु 03/07/2094	शनि 20/05/2111	बुध 12/10/2129	केतु 12/10/2144
गुरु 21/06/2079	शनि 13/01/2097	बुध 27/01/2114	केतु 10/10/2130	शुक्र 06/11/2144
शनि 27/04/2082	बुध 21/04/2099	केतु 08/03/2115	शुक्र 09/08/2133	00/00/0000
बुध 14/11/2084	केतु 28/03/2100	शुक्र 07/05/2118	सूर्य 16/06/2134	00/00/0000
केतु 02/12/2085	शुक्र 27/11/2102	सूर्य 19/04/2119	चंद्र 15/11/2135	00/00/0000
शुक्र 02/12/2088	सूर्य 15/09/2103	चंद्र 18/11/2120	मंगल 12/11/2136	00/00/0000
सूर्य 27/10/2089	चंद्र 14/01/2105	मंगल 27/12/2121	राहु 01/06/2139	00/00/0000
चंद्र 27/04/2091	मंगल 21/12/2105	राहु 02/11/2124	गुरु 06/09/2141	00/00/0000
मंगल 15/05/2092	राहु 16/05/2108	गुरु 17/05/2127	शनि 16/05/2144	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 6 वर्ष 6 मा 7 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - सूर्य	केतु - चंद्र	केतु - मंगल	केतु - राहु	केतु - गुरु
11/12/2025	18/04/2026	17/11/2026	15/04/2027	03/05/2028
18/04/2026	17/11/2026	15/04/2027	03/05/2028	09/04/2029
सूर्य 18/12/2025	चंद्र 06/05/2026	मंगल 26/11/2026	राहु 12/06/2027	गुरु 17/06/2028
चंद्र 28/12/2025	मंगल 18/05/2026	राहु 18/12/2026	गुरु 02/08/2027	शनि 10/08/2028
मंगल 05/01/2026	राहु 19/06/2026	गुरु 07/01/2027	शनि 02/10/2027	बुध 28/09/2028
राहु 24/01/2026	गुरु 18/07/2026	शनि 31/01/2027	बुध 25/11/2027	केतु 17/10/2028
गुरु 10/02/2026	शनि 20/08/2026	बुध 21/02/2027	केतु 17/12/2027	शुक्र 13/12/2028
शनि 02/03/2026	बुध 20/09/2026	केतु 02/03/2027	शुक्र 19/02/2028	सूर्य 30/12/2028
बुध 20/03/2026	केतु 02/10/2026	शुक्र 26/03/2027	सूर्य 09/03/2028	चंद्र 28/01/2029
केतु 28/03/2026	शुक्र 07/11/2026	सूर्य 03/04/2027	चंद्र 10/04/2028	मंगल 17/02/2029
शुक्र 18/04/2026	सूर्य 17/11/2026	चंद्र 15/04/2027	मंगल 03/05/2028	राहु 09/04/2029

केतु - शनि	केतु - बुध	शुक्र - शुक्र	शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र
09/04/2029	19/05/2030	16/05/2031	14/09/2034	14/09/2035
19/05/2030	16/05/2031	14/09/2034	14/09/2035	15/05/2037
शनि 12/06/2029	बुध 09/07/2030	शुक्र 05/12/2031	सूर्य 03/10/2034	चंद्र 04/11/2035
बुध 08/08/2029	केतु 30/07/2030	सूर्य 04/02/2032	चंद्र 02/11/2034	मंगल 10/12/2035
केतु 01/09/2029	शुक्र 28/09/2030	चंद्र 15/05/2032	मंगल 23/11/2034	राहु 10/03/2036
शुक्र 07/11/2029	सूर्य 16/10/2030	मंगल 25/07/2032	राहु 17/01/2035	गुरु 30/05/2036
सूर्य 27/11/2029	चंद्र 16/11/2030	राहु 24/01/2033	गुरु 07/03/2035	शनि 04/09/2036
चंद्र 31/12/2029	मंगल 07/12/2030	गुरु 05/07/2033	शनि 04/05/2035	बुध 29/11/2036
मंगल 24/01/2030	राहु 30/01/2031	शनि 14/01/2034	बुध 24/06/2035	केतु 03/01/2037
राहु 26/03/2030	गुरु 19/03/2031	बुध 05/07/2034	केतु 16/07/2035	शुक्र 15/04/2037
गुरु 19/05/2030	शनि 16/05/2031	केतु 14/09/2034	शुक्र 14/09/2035	सूर्य 15/05/2037

शुक्र - मंगल	शुक्र - राहु	शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि	शुक्र - बुध
15/05/2037	15/07/2038	15/07/2041	15/03/2044	16/05/2047
15/07/2038	15/07/2041	15/03/2044	16/05/2047	16/03/2050
मंगल 09/06/2037	राहु 27/12/2038	गुरु 22/11/2041	शनि 14/09/2044	बुध 09/10/2047
राहु 12/08/2037	गुरु 22/05/2039	शनि 25/04/2042	बुध 25/02/2045	केतु 09/12/2047
गुरु 08/10/2037	शनि 11/11/2039	बुध 10/09/2042	केतु 04/05/2045	शुक्र 29/05/2048
शनि 14/12/2037	बुध 15/04/2040	केतु 06/11/2042	शुक्र 12/11/2045	सूर्य 20/07/2048
बुध 13/02/2038	केतु 17/06/2040	शुक्र 17/04/2043	सूर्य 09/01/2046	चंद्र 14/10/2048
केतु 10/03/2038	शुक्र 17/12/2040	सूर्य 05/06/2043	चंद्र 16/04/2046	मंगल 14/12/2048
शुक्र 20/05/2038	सूर्य 10/02/2041	चंद्र 25/08/2043	मंगल 22/06/2046	राहु 18/05/2049
सूर्य 10/06/2038	चंद्र 12/05/2041	मंगल 21/10/2043	राहु 13/12/2046	गुरु 03/10/2049
चंद्र 15/07/2038	मंगल 15/07/2041	राहु 15/03/2044	गुरु 16/05/2047	शनि 16/03/2050

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - केतु	सूर्य - सूर्य	सूर्य - चंद्र	सूर्य - मंगल	सूर्य - राहु
16/03/2050	16/05/2051	02/09/2051	03/03/2052	09/07/2052
16/05/2051	02/09/2051	03/03/2052	09/07/2052	03/06/2053
केतु 09/04/2050	सूर्य 21/05/2051	चंद्र 18/09/2051	मंगल 10/03/2052	राहु 27/08/2052
शुक्र 19/06/2050	चंद्र 30/05/2051	मंगल 28/09/2051	राहु 30/03/2052	गुरु 10/10/2052
सूर्य 11/07/2050	मंगल 06/06/2051	राहु 26/10/2051	गुरु 16/04/2052	शनि 01/12/2052
चंद्र 15/08/2050	राहु 22/06/2051	गुरु 19/11/2051	शनि 06/05/2052	बुध 17/01/2053
मंगल 09/09/2050	गुरु 07/07/2051	शनि 18/12/2051	बुध 24/05/2052	केतु 05/02/2053
राहु 12/11/2050	शनि 24/07/2051	बुध 13/01/2052	केतु 31/05/2052	शुक्र 31/03/2053
गुरु 08/01/2051	बुध 09/08/2051	केतु 23/01/2052	शुक्र 22/06/2052	सूर्य 17/04/2053
शनि 16/03/2051	केतु 15/08/2051	शुक्र 23/02/2052	सूर्य 28/06/2052	चंद्र 14/05/2053
बुध 16/05/2051	शुक्र 02/09/2051	सूर्य 03/03/2052	चंद्र 09/07/2052	मंगल 03/06/2053

सूर्य - गुरु	सूर्य - शनि	सूर्य - बुध	सूर्य - केतु	सूर्य - शुक्र
03/06/2053	22/03/2054	04/03/2055	08/01/2056	15/05/2056
22/03/2054	04/03/2055	08/01/2056	15/05/2056	15/05/2057
गुरु 11/07/2053	शनि 16/05/2054	बुध 17/04/2055	केतु 16/01/2056	शुक्र 15/07/2056
शनि 27/08/2053	बुध 04/07/2054	केतु 05/05/2055	शुक्र 06/02/2056	सूर्य 02/08/2056
बुध 07/10/2053	केतु 24/07/2054	शुक्र 26/06/2055	सूर्य 12/02/2056	चंद्र 02/09/2056
केतु 24/10/2053	शुक्र 20/09/2054	सूर्य 11/07/2055	चंद्र 23/02/2056	मंगल 23/09/2056
शुक्र 12/12/2053	सूर्य 07/10/2054	चंद्र 06/08/2055	मंगल 01/03/2056	राहु 17/11/2056
सूर्य 26/12/2053	चंद्र 05/11/2054	मंगल 24/08/2055	राहु 21/03/2056	गुरु 04/01/2057
चंद्र 20/01/2054	मंगल 25/11/2054	राहु 10/10/2055	गुरु 07/04/2056	शनि 03/03/2057
मंगल 06/02/2054	राहु 16/01/2055	गुरु 20/11/2055	शनि 27/04/2056	बुध 24/04/2057
राहु 22/03/2054	गुरु 04/03/2055	शनि 08/01/2056	बुध 15/05/2056	केतु 15/05/2057

चंद्र - चंद्र	चंद्र - मंगल	चंद्र - राहु	चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि
15/05/2057	16/03/2058	15/10/2058	15/04/2060	15/08/2061
16/03/2058	15/10/2058	15/04/2060	15/08/2061	16/03/2063
चंद्र 10/06/2057	मंगल 28/03/2058	राहु 05/01/2059	गुरु 18/06/2060	शनि 14/11/2061
मंगल 27/06/2057	राहु 29/04/2058	गुरु 19/03/2059	शनि 04/09/2060	बुध 04/02/2062
राहु 12/08/2057	गुरु 27/05/2058	शनि 14/06/2059	बुध 12/11/2060	केतु 10/03/2062
गुरु 22/09/2057	शनि 30/06/2058	बुध 30/08/2059	केतु 10/12/2060	शुक्र 14/06/2062
शनि 09/11/2057	बुध 30/07/2058	केतु 01/10/2059	शुक्र 01/03/2061	सूर्य 13/07/2062
बुध 22/12/2057	केतु 12/08/2058	शुक्र 01/01/2060	सूर्य 26/03/2061	चंद्र 30/08/2062
केतु 09/01/2058	शुक्र 16/09/2058	सूर्य 28/01/2060	चंद्र 05/05/2061	मंगल 03/10/2062
शुक्र 28/02/2058	सूर्य 27/09/2058	चंद्र 14/03/2060	मंगल 03/06/2061	राहु 29/12/2062
सूर्य 16/03/2058	चंद्र 15/10/2058	मंगल 15/04/2060	राहु 15/08/2061	गुरु 16/03/2063

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

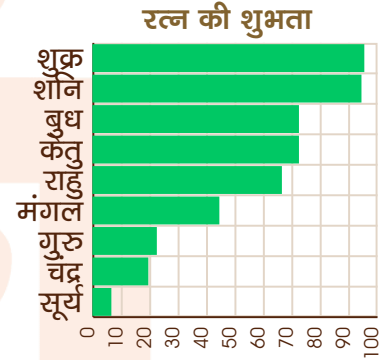
मूलांक	5
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 5, 9, 6
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	95%	धनार्जन, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	94%	धन, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	72%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	72%	भाग्योदय, धनार्जन
गोमेद	राहु	66%	पराक्रम, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	44%	दाम्पत्य कष्ट, ग्रह कलेश, हानि
पुखराज	गुरु	22%	सन्तति कष्ट, व्यय, पराक्रम हानि
मोती	चंद्र	19%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	6%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	16/05/2031	0%	0%	53%	72%	22%	100%	82%	53%	84%
शुक्र	16/05/2051	0%	0%	44%	78%	22%	100%	100%	72%	78%
सूर्य	15/05/2057	31%	31%	53%	72%	34%	83%	82%	53%	59%
चंद्र	16/05/2067	19%	44%	44%	78%	22%	95%	94%	53%	59%
मंगल	15/05/2074	19%	31%	59%	59%	34%	95%	94%	53%	78%
राहु	15/05/2092	0%	0%	19%	72%	22%	100%	100%	78%	59%
गुरु	16/05/2108	19%	31%	53%	59%	47%	83%	94%	66%	72%
शनि	17/05/2127	0%	0%	19%	78%	22%	100%	100%	72%	59%
बुध	16/05/2144	19%	0%	44%	84%	22%	100%	94%	66%	72%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/12/2102-29/11/2105	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	अल्प बचत
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	कम खर्च
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति जन्म कुण्डली में सप्तम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगल का दोष समाप्त हो जाता है अतः ऐसा मंगल आपको अधिकांशतया शुभ फल ही प्रदान करेगा। फलतः आपका एवं आपके पति का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। पति के स्वभाव में उग्रता का समावेश हो सकता है। लेकिन इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुखोपभोग के साधनों को अर्जित करेंगी एवं धन धान्य से युक्त रह कर सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

यद्यपि आपके लिए यह मंगल शुभ फल दायक रहेगा परन्तु आपके विवाह में इसके कारण विलम्ब हो सकता है लेकिन विवाह अत्यन्त ही शान्ति पूर्ण ढंग से सम्पन्न होगा। आपको किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के उपरान्त आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही पति के स्वभाव में यदा कदा क्रोधाधिक्य की प्रवृत्ति उत्पन्न होगी जिससे अल्प समय के लिए आपस में तनाव तथा कटुता के संबंध उत्पन्न होंगे। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुण्डली में सप्तम भाव में मंगल स्थित होने से आप पति के रूप में किसी योग्य पुरुष को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। अपने दाम्पत्य जीवन को प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप अपने कार्य क्षेत्र में प्रायः सफलता एवं उन्नति प्राप्त करेंगी तथा समाज में पूर्ण मान सम्मान प्रतिष्ठा तथा यश भी अर्जित करेंगी। लग्न पर दृष्टि होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा क्रोध के भाव की प्रबलता दृष्टिगोचर होगी। साथ ही द्वितीय भाव पर दृष्टि होने से आपका परिवारिक जीवन सामान्यतया सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प समय के लिए परिवारिक वातावरण में तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

इसके अतिरिक्त विद्या अध्ययन में आप हमेशा सफल रहेंगी एवं इस विषय में आप को किसी भी प्रकार की समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आप शान्ति एवं सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को और अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक पुरुष या ऐसे मंगली पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसका मंगली दोष उचित नियम के अनुसार भंग हो रहा हो। ऐसे उचित पुरुष से दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करके आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगी तथा आनन्द पूर्वक समस्त आवश्यक सुखों का उपभोग करेंगी। एक भाग्यशाली महिला के रूप में सुखैश्वर्य से सम्पन्न तथा धनधान्य से युक्त रहकर प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली में मिलान के समय यदि पुरुष की कुण्डली में सप्तम भाव में ही मंगल स्थित हो तो उसकी यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भाव में मांगलिक होने से आप लोगों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा। अतः दाम्पत्य सुख के उपभोग में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होंगे। साथ ही अन्य भावों में मंगल स्थित यदि दोष मुक्त हो रहा हो तो दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। इस प्रकार यदि आप सावधानी पूर्वक मिलान करके वर का चुनाव करेंगी तो सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

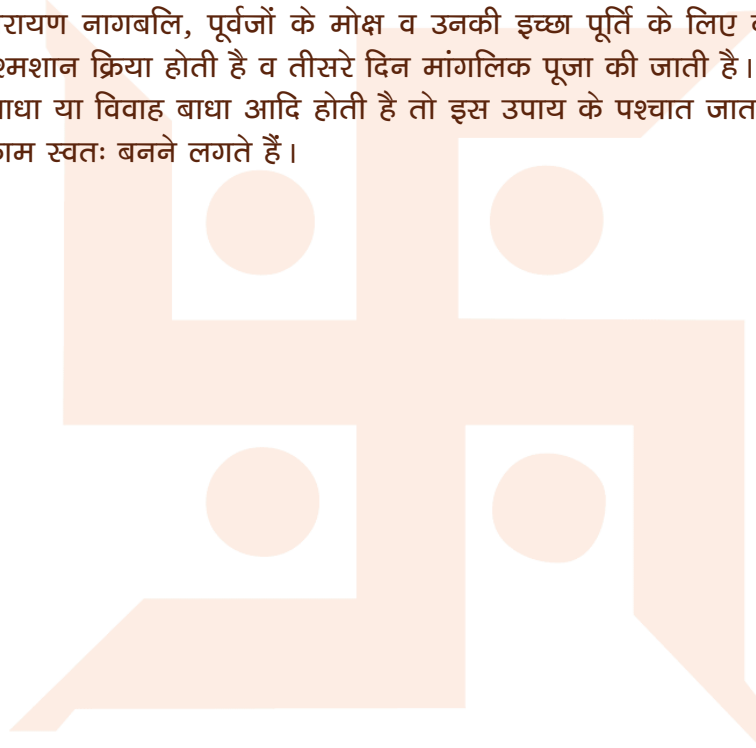
आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मकर लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आप मेहनती हैं, इसलिए बिना रुके निरन्तर कार्य करते रहते हैं, जिस कारण इनके किये हुए कार्यों में गलतियों की संभावना कम रहती है। आप दृढ़ निश्चयी और संयमी हैं। जीवन से आने वाली बाधाओं से घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते हैं। दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति रखते हैं। साथ ही आप हंसमुख हैं। आप में व्यय अधिक करने का स्वभाव हो सकता है। दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। आप हंसमुख हैं। आप कम समय में किसी भी परिस्थिति में अपने का ढालने में दक्ष होते हैं।

आप गलत बातें सहन नहीं कर पाते चाहे उस विरोध में अकेले ही रह जाये। आप

अपनी समझदारी और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए बड़ी ही आसानी से अपना कार्य करवा लेते हैं। हर विषय में आपकी रुचि रहती है और हर क्षेत्र में सफलता पाना चाहे हैं और अपनी मेहनत और लगन से सफलता हासिल कर भी लेते हैं। आप न्याय है और कभी किसी के साथ धोखा नहीं करते। असफलता मिलने पर आप शीघ्र निराश हो जाते हैं। व्यर्थ की बातें करने में अपना वक्त व्यय नहीं करते और अपने भविष्यके बारे में सोचते हैं। आप परोपकारी है और अनुशासन पसंद हैं। अपने सिद्धांतों पर जीते हैं। आप परोपकारी हैं।

कुंडली के सभी 12 भाव सदैव शुभ फल नहीं देते। 12 भावों में से 6, 8 व 12 वां भाव जिन्हें त्रिक भाव के नाम से भी जाना जाता है। इन भावों के भावेश तथा इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ होने के कारण अशुभ फल देते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते है। कुंडली के षष्ठ भाव को रोग, ऋण और शत्रु भाव की संज्ञा की जाती हैं। छोटी अवधि के रोग भी इसी भाव से देखे जाते हैं। तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, कलेश, विघ्न और अकाल मृत्यु और परेशनियों का विचार किया जाता है। अष्टमेश का किसी भी भाव-भावेश से सम्बन्ध बनना अनुकूल नहीं माना जाता है। 6 व 8 भावों के बाद एक अन्य व अंतिम त्रिक भाव 12 वां भाव है। 12 वें भाव से व्यय, सरकारी दंड, लम्बी अवधि का कारावास, शयन, मोक्ष, टैक्स तथा विदेश स्थान का विचार किया जाता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

बुध आपके षष्ठेश व नवमेश है, आपका पारिवारिक जीवन कष्टकारी हो सकता है। व्यापारिक विषयों में भी हानि के योग बन सकते हैं। इसके अलावा यह आपको शत्रुओं के द्वारा धन-हानि की संभावनाएं दे सकता है। यह योग पिता के स्वास्थ्य के पक्ष से भी शुभ नहीं है। सूर्य अष्टमेश गुरु द्वादशेश तथा तृतीयेश हैं।

चन्द्र द्वादश भाव में आपको बचपन में रोगी, कष्टों को सहने वाला, शत्रुओं की अधिकता, धन-हानि, असत्य वक्ता बना सकता है। स्वास्थ्य के पक्ष से भी चन्द्र की यह स्थिति शुभ फलदायी नहीं है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 4, 5 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। ये विचारशीलता एवं गंभीरता के भाव से युक्त रहते हैं तथा अत्यंत ही परिश्रमी एवं कार्यशील होते हैं फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता अद्वितीय होती है तथा यही गुण जीवन में इनकी सफलता का रहस्य होता है। इनमें सेवा परायणता का भाव भी रहता है तथा देश एवं समाज सेवा के कार्यों में प्रवृत्त रहते हैं। ये साहसी एवं निर्भीक होते हैं तथापि मन में यदा कदा उदासीनता की भावना विद्यमान रहती है जिससे सुख में खुशी तथा दुःख में कष्ट की अनुभूति कम होती है। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण कम ही रहता है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के ये इच्छुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये अनुसन्धान, विज्ञान एवं शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में आदरणीय रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ एवं बलवान महिला होंगी। आपमें आदर्शवादिता का भाव भी होगा तथा अपने आदर्शों पर स्वतंत्र रूप से विचार करेंगी। साथ ही आपके उच्चादर्शों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगी। दार्शनिकता के भाव से भी आप युक्त होंगे तथा शत्रु एवं प्रतिद्विन्दियों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव रहेगा फलतः वे भी आपसे प्रभावित होंगे। अतः सदगुणों से सभी लोगों के मध्य आप आदरणीय रहेंगी।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी फलतः आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की छाप रहेगी। कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके कर्तव्य परायणता तथा परिश्रम से उच्चाधिकारी वर्ग या सहयोगी सन्तुष्ट होंगी। फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगी। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा परस्पर सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। उत्तम कार्यों को करने में भी आप रुचिशील होंगी फलतः समाज में एक आदरणीय महिला के रूप में आपके छवि रहेगी।

स्वव्यवसाय के प्रति आपके इच्छा होगी तथा इसको सम्पन्न करके इसमें आपको इच्छित लाभ एवं उन्नति मिलेगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी उत्तम रहेगी जिससे धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगी। साथ ही सुख संसाधनों से भी सुसम्पन्न रहेंगी तथा अपने कार्यों से समाज में प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करेंगी। इससे लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी परन्तु यदा कदा आप कृपणता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी।

धर्म के प्रति आपके श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्य कलाप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगी तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग अवसरानुकूल प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार परिश्रमी एवं

पराक्रमी महिला होंगी तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगी ।



JYOTISACHARYA IIMT university meerut

PT.BIRENDRA DUBEY(GOLD medalist)sampark daltonganj & Ranchi

9973491191

dubyebirendra@gmail.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा बुराइयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगी। आपकी प्रवृत्ति स्पष्ट बोलने की रहेगी तथा जो कुछ भी आपके मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगी। साथ ही आप में निस्वार्थ का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अपने कार्य कलापों को इसी भाव से सम्पन्न करती रहेंगी परन्तु अन्य जनों की बातों में शीघ्र ही आएंगी जिससे यदा कदा आपको अनावश्यक समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है। आप एक कर्तव्य परायण महिला होंगी तथा पारिवारिक जनों के प्रति आपके मन में पूर्ण लगाव रहेगा साथ ही घर को भी हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पसंद करेंगी।

पारिवारिक जनों के लिए आप अत्यधिक चिन्तित रहेंगी तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से आपका उनसे लगाव रहेगा। आप में अनावश्यक चंचलता के भाव का अभाव रहेगा तथा किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगी। आपकी वाणी में मधुरता रहेगी तथा विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना आपको रुचिकर लगेगा। साथ ही पारिवारिक जनों के साथ समय समय पर धार्मिक एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित लाभ प्राप्त करेंगी तथा सज्जनों एवं महात्माओं का समय समय पर सत्कार करती रहेंगी। साथ ही परोपकार संबंधी कार्यों में भी आपकी रुचि होगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है यद्यपि शनि नीचराशि में है लेकिन लग्नेश होकर सामान्यतया शुभफल ही प्राप्त होंगे। अतः सांसारिक सुखों को अर्जित करने में समर्थ होंगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगी। लेकिन सुखों को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा यदा कदा इनमें विलम्ब भी होगा। लेकिन आप परिश्रमी एवं बुद्धिमान महिला हैं। अतः इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर होंगी।

जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा किसी वृद्ध महिला की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपको मिल सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समय समय पर धन स्वपराक्रम एवं परिश्रम से धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी। लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको कोई भी संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ के भी योग बनेंगे।

आपका आवास स्थान मध्यम होगा परंतु आवश्यक सुख-सुविधाओं से भी सुसज्जित होगा। घर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से इच्छुक होंगी। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होंगी तथा संबंधों में औपचारिकता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था में इसमें अनुकूलता आएगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकतवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रहेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे परंतु आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में यदा कदा तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा छोटी कक्षाओं से आप स्वपरिश्रम से कुछ अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगी परंतु स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप स्नातक परीक्षा की बजाय किसी तकनीकी पाठ्यक्रम का अध्ययन करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा बृहस्पति भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलताएं अर्जित करेंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी फलतः समयानुसार इस गुण से लाभ एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी शीघ्र एवं सुगमता पूर्वक करने में समर्थ होंगी जिससे अन्य लोग भी आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म शास्त्र में आपकी रुचि होगी तथा यत्न पूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी। आधुनिक, वैज्ञानिक विषयों, साहित्य, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र में भी आपकी रुचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इन क्षेत्रों में ज्ञानार्जन करके एक विदुषी के रूप में सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित करेंगी।

पंचमभाव में बृहस्पति की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी परन्तु आपका प्रेम मर्यादा नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण पर आधारित होगा तथा परस्पर भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में हो सकती है जिससे आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

संतति भाव में बृहस्पति की स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर संतति प्राप्त होगी परन्तु पुत्र संतति में विलम्ब होगा लेकिन प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना कर्तव्य समझेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव, विश्वास एवं सम्बन्धों में मधुरता बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे पिता के माध्यम से ही सम्पन्न करेंगे लेकिन आदर का भाव दोनों के प्रति बराबर होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली समझी जायेंगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में वांछित उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करके अपने उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त करेगी। आप भी उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगी। आपके बच्चे सक्रिय गुणवान एवं उत्तम कार्य कलापों को सम्पन्न करने वाले होंगे जिससे अन्य लोग भी उनसे प्रभावित होंगे तथा वांछित स्नेह तथा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपका संतति सुख अच्छा रहेगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा मंगल भी नीच राशि में सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक सुशील चंचल बुद्धिमान एवं धनाढ्य होता है लेकिन नीचस्थ मंगल के प्रभाव से वह चिड़चिड़ा स्वार्थी तथा स्वाभिमानी प्रवृत्ति का होता है एवं सहिष्णुता के भाव की न्यूनता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके यद्यपि सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथापि उग्रता एवं चिड़चिड़ापन भी उनमें विद्यमान होगा। सांसारिक कार्यों को वह साहस एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगे तथा उनके साहसी कार्यों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। नीचस्थ मंगल के प्रभाव से उनकी प्रवृत्ति स्वार्थी होगी अतः समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन नहीं करेंगे।

आपके पति लालिमा लिए गौर वर्ण की व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी दुबली पतली होगी परन्तु शरीर में पुष्टता रहेगी इससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी एवं व्यक्तित्व में आकर्षक होगा। उनका भौतिकता के प्रति भी आकर्षण होगा। कर्क राशि के प्रभाव से वह कला एवं संगीत में रुचिशील होंगे एवं सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के प्रति मन में लगाव होगा तथा उनके संग्रह में तत्पर रहेंगे।

सप्तम भाव में मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा एवं विवाह पूर्व भी वार्ताओं में गतिरोध आएंगे। आपका विवाह बंधु या संबंधियों के माध्यम से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध एवं शिक्षित परिवार में होगा तथा विवाह में आपको मायके से प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। साथ ही अन्यत्र से भी उपहार स्वरूप बहुमूल्य वस्तुएं एवं उपकरण प्राप्त होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके विशेष मधुर संबंध नहीं रहेंगे परन्तु औपचारिकता बनी रहेगी फलतः समयानुसार एक दूसरे के प्रति अपनी सदाशयता के परिचय देंगे।

सास ससुर के प्रति आपके पति का विशेष सेवा भाव नहीं होगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा नहीं करेंगे। साले एवं सालियां भी उनकी उग्रता तथा चिड़चिड़ेपन से अप्रसन्न होंगे तथा उन्हें किसी भी प्रकार का सम्मान एवं सहयोग प्रदान नहीं करेंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति प्रतिकूल रहेगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः साझेदारी के कार्यों की जीवन में यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही सूर्य भी दशम भाव में ही स्थित है। तुला राशि वायुतत्व एवं सूर्य अग्नि तत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया युक्त होगा तथा श्रमसाध्य का भाव अल्प होगा। एवं उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी लेकिन नीचस्थ सूर्य के प्रभाव से आपको यदा कदा इसमें अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। अतः परिश्रम पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करें।

दशमभाव में तुला राशिस्थ सूर्य के प्रभाव से आपके लिए आजीविका का क्षेत्र कार्यालयीय कार्य, औषधिविज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स का क्षेत्र ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, वायुसेना या एयर लाइंस, प्रशासकीय सेवा तथा राजनीति का क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेगा। साथ ही विज्ञान में भी आप शोध कार्य करने में समर्थ हो सकती है। अतः आपको चाहिए कि अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही कार्य का चयन करें इससे आप आसानी से उन्नति प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगी।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए कैमिस्ट, आयुर्वेद औषधि, ऊनी तथा आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, कम्प्यूटर संबंधी कार्य, रत्न एवं धातु व्यापार, इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों का क्रय विक्रय या उत्पादन, सरकार से संबधित कार्य या ठेके तथा राजनीति के क्षेत्र में आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही इनमें प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ भी प्राप्त होगा जिससे आपकी आर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी।

दशमभाव में सूर्य के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चपद को भी प्राप्त करने में समर्थ होंगी। समाज में भी आपका प्रभाव होगा तथा दूर दूर तक यश भी व्याप्त होगा तथा सभी लोग आपको सम्माननीय समझेंगे। आप किसी सामाजिक, सांस्कृतिक संस्था अथवा क्लब आदि के भी आदरणीय सदस्य या पदाधिकारी हो सकती है यद्यपि इन सबको प्राप्त करने में आपको काफी पराक्रम एवं परिश्रम का सामना करना पड़ेगा तथा इसमें विलम्ब भी होगा लेकिन इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा ईमानदारी से अपने कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता पराक्रमी तेजस्वी शिक्षित एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे पूर्ण आदरणीय समझे जाएंगे। साथ ही अन्य जनों के प्रति भी वे सेवा भाव रखेंगी। आपकी शिक्षा के प्रति वे पूर्ण सतर्क होंगी तथा इसका यथोचित प्रबंध करेंगी। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा आपको उन्हीं के प्रयत्नों एवं प्रभाव से अनुकूल कार्यक्षेत्र की प्राप्ति होगी। आप भी एक परिश्रमी महिला होंगी तथा परिश्रम एवं योग्यता से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी परन्तु आपके आपसी संबंधों में विशेष मधुरता नहीं होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक मतभेद बने रहेंगे। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी एक दूसरे का सहयोग कम ही लेंगे। अतः संबंधों में अनुकूलता रखने के लिए आपको ऐसी परिस्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु छठे भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधिमें आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जायेगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की संभावना बनी रहेगी। द्वितीयस्थराहु के प्रभाव से धन संचित करने में बाधा उत्पन्न होगी और धनागम के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। आपको अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाना चाहिए। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

02 जून के बाद आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे जिससे आप की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों में पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कोई बड़ा निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। छठे स्थान केगुरु आपके मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध खराब कर सकते हैं।

02 जून के बाद जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप

अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। तृतीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

02 जूनके बाद आपके बच्चे के लिए समय अच्छा हो रहा है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

02 जून के बाद का समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अनुकूल है। यदि कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपकी छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिएवर्ष के पूर्वार्द्ध में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ मे नहीं लगेगापरन्तु 02 जूनसे गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने

जीवनसाथी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष लग्न स्थान में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। अपने भाई या किसी के साथ मिलकर व्यापार कर सकते हैं, अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ धनार्जन करेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

जून के बाद गुरु एवं शनि दोनों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है अतः कोई निवेश न करें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उस समय आप बहुत अच्छी बचत कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपका पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। अविवाहित जातकों का विवाह संस्कार होसकता है। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी जिससे विरोधाभास व वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकता है। माता-पिताका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा।

26 जून के बाद आपको संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्त के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। 26 नवम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं परन्तु लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि से आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपको खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या भी सुव्यवस्थित रखनी चाहिए। सुबह सुबह टहलना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

जून के बाद स्वास्थ्य के लिहाज से समय अच्छा नहीं रहेगा। शनि, राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कोई लम्बी बीमारी होने के संकेत मिल रहे हैं। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा मुश्किल भरा हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु जल तत्त्वाशि में होने कारण आप कफ, पाचन व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही आपके लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। 26 नवम्बर के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आप परिश्रम के बल पर प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए अच्छा है।

जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको परिश्रम का फल नहीं मिलेगा, जिससे आपके करियर में सफलता की उम्मीद कम ही लग रही है। उच्च शिक्षा

प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 26 नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि की नवम भाव पर दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पत्नी के साथ हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। जून के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या लोहे के तवे का दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और व्रत रखें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु नवम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा परन्तु फरवरी से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की चेष्टा करेंगे। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से कार्य व्यवसाय में कुछ सुधार होगा। कार्य-कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके संचित धन में कमी आ सकती है। आय के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कुछ कमजोर हो सकती है। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान का शनि छोटे भाई-बहनों के लिए बहुत अच्छा है और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेगा। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आपके बच्चों के विवाह की संभावना भी बन रही है। फरवरी के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

24 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक माहौल को खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी जिसके कारण आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपको बच्चों के बारे में शुभ समाचार मिलेंगे। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे।

सन्तान इच्छुक जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। वह अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाई महसूस करेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं होता। अपने स्वास्थ्य को लेकर हमेशा सचेत रहना चाहिए क्योंकि राहु अचानक ही शारीरिक परेशानी देते हैं। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या को भी सुधारें।

24 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको करियर में सफलता पाने के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु पढ़ाई में व्यवधान भी बना रहेगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी प्राप्त होगा। फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। 26 जून के बाद आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा परन्तु फरवरी के बाद मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई के बाद पंचम भाव

पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका सहयोग करेंगे। 29 मार्च के बाद भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है। द्वादशस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में गुप्त शत्रु विघ्न उत्पन्न कर सकते हैं जिसके कारण आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजयी प्राप्त कर लेंगे और आपके कार्यों पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ परेशानी आ सकती है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में बुद्धिमानी से काम लें। 05 अक्टूबर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। द्वादशस्थ राहु के कारण अचानक कुछ अनावश्यक खर्च भी आ सकते हैं। 29 मार्च के बाद अपने बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे।

25 अगस्त से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के

संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

25 अगस्त से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मार्च के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। शिक्षा-दीक्षा के प्रति इनकी रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

08 अगस्त के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता व सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

25 अगस्त से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है या मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। आपको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। 29 मार्च के बाद विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों को करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। अतः आप अपने पूर्ण मन से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी। 29 मार्च के बाद छोटी यात्राएं होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल व उन्नति कारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा-पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं समाज में ख्याति प्राप्त होगी। 25 अगस्त से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

प्रथम तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए श्रेष्ठतम रहेगा। जो आप चाहते हैं उसे पाकर ही रहते हैं यही बात आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे। मई के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी में परिवर्तन चाहते हैं उनके लिए मई का महीना बहुत अच्छा रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपकी आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम माह छोड़ दिया जाए तो पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे और इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। मई के बाद रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आप कागजी कार्यवाही या फिर किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। नई योजना बनाने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय के नये साधन मिलेंगे। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। शनि ग्रह के गोचर के बाद घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाएंगे। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

23 सितम्बर के बाद सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। समाज में पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपकी सन्तान की शिक्षा-दीक्षा में सुधार व पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से उन्नति भी होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का शनि गर्भवती स्त्रियों के लिए अच्छा नहीं है। संतान के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आ सकती है। संतान के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा।

स्वास्थ्य

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय रहेंगे। आप दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति हैं जिसके कारण आप स्वस्थ रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

17 अप्रैल के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके लिए समय कुछ तनावपूर्ण हो सकता है। अपनी चिंता और व्याकुलता विजय पाने के लिए आप ध्यान या योग का सहारा ले सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर ईर्ष्या, प्रतिशोध और विश्वासघात जैसी बुरी भावनाओं को खत्म कर आपके अन्दर सकारात्मकता प्रदान करेगा जिससे आपको शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी। आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती ही रहेंगी साथ ही सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक प्रतिकूलता के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 17 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का पाठ आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

